

ई.एच.आई.-03

स्नातक उपाधि कार्यक्रम  
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य  
(जुलाई 2021 और जनवरी 2022 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.आई.-03

पाठ्यक्रम शीर्षक : भारत : 8वीं शताब्दी ईसवी से 15वीं शताब्दी ईसवी तक



इतिहास संकाय  
सामाजिक पिज्ञान विद्यापीठ  
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय  
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : बी.डी.पी.  
पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.आई.-03

प्रिय विद्यार्थी,

जैसा कि आपको बी.डी.पी. की कार्यक्रम दर्शिका में बताया गया है आपको इस ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए एक अध्यापक जांच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) करना होगा।

सत्र	जमा करने की तिथि	कहाँ जमा करना है
जुलाई 2021 सत्र के लिए	31 मार्च 2022	पूरा किया हुआ सत्रीय कार्य अपने केंद्र के संयोजक के पास जमा करा दें।
जनवरी 2022 सत्र के लिए	30 सितम्बर 2022	

सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ लीजिए।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें :

सत्रीय कार्य करने से पहले ध्यान रखें : सामाजिक विज्ञानों में किसी भी तरह के लेखन के लिए चार सोपान आवश्यक हैं। ये हैं (क) योजना (ख) वस्तु चयन (ग) प्रस्तुतीकरण (घ) व्याख्या

(क) **योजना** : आपसे क्या प्रश्न पूछा गया है और उत्तर में क्या लिखना है। इस पर विचार कीजिए। इकाइयों का ठीक तरह से अध्ययन कीजिए। कुछ अतिरिक्त जानकारी चाहें तो पुस्तकालय का उपयोग कीजिए।

यह देखें कि प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना है या 250 शब्दों में या सिर्फ 100 शब्दों में। बड़े प्रश्नों के लिए विवरणों के साथ व्याख्या भी करनी होगी। तीसरे प्रकार के प्रश्न के उत्तर में संगत विवरणों को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

(ख) **वस्तु चयन** : उत्तर देने के लिए आपको सही तथ्यों तथा विवरणों का चयन करना होगा। इसके लिए आप (i) अपनी इकाइयों से नोट्स लें, (ii) तथ्यों को ध्यान से देखें और उत्तर के लिए अनावश्यक विवरण निकाल दें, और (iii) उत्तर का पहला खाका लिख लें। इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि आप उत्तर में क्या सूचनाएं/विवरण प्रस्तुत करना चाहते हैं।

(ग) **प्रस्तुतीकरण** : अब आप उत्तर का दूसरा खाका तैयार करें। इससे आप अपने विचारों को स्पष्टता से व्यक्त कर सकेंगे। आप यह भी जान सकेंगे कि दी गयी शब्द सीमा में आप बात कैसे कह सकते हैं।

उत्तर का तीसरा और अंतिम प्रारूप तैयार कीजिए और देखिए कि आपने सारी आवश्यक बातें अपेक्षित शब्द सीमा में प्रस्तुत की हैं या नहीं।

(घ) **व्याख्या** : इतिहास लेखन में व्याख्या की प्रक्रिया का अनन्य स्थान है। आपकी योजना तथा वस्तु चयन में भी व्याख्या की झलक दिखाई देंगी। संभवतः, शायद, क्योंकि, इसलिए, आदि शब्दों के साथ आपके वक्तव्य व्याख्या की झलक देते हैं। यहाँ आपको ध्यान रखना होगा कि आपके तथ्य आपके वक्तव्य का समर्थन करते हैं अथवा नहीं।

**टिप्पणी** : अगर आपके पास समय सीमित हो तो :

- 1) पहला प्रारूप तैयार करें, उत्तर की संगतता, शब्द सीमा, आदि पर ध्यान दें, और
- 2) अंतिम प्रारूप तैयार करें।

अब आप उत्तर लिखने के लिए तैयार होंगे।

**नोट :** सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक प्रश्न के सामने लिखें हैं।

**भाग 1: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।**

- 1 प्रारंभिक मध्यकालीन कृषि अर्थव्यवस्था पर एक लेख लिखिए। 20  
**अथवा**  
 भारत में प्रारंभिक मध्यकाल के मंदिरों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
- 2 मंगोलों की बार-बार घुसपैठ के कारण उत्तर-पश्चिमी सीमा दिल्ली के सुल्तानों के लिए चिंता का विषय बनी रही। क्या आप सहमत हैं? 20  
**अथवा**  
 उत्तर भारत में प्रमुख लोकप्रिय भवित आंदोलनों की मुख्य विशेषताओं पर एक लेख लिखिए।

**भाग 2: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।**

- 3 प्रारंभिक मध्यकालीन भारत के दौरान व्यापारिक गतिविधियों और शहरीकरण के विकास के बीच संबंधों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें। 12  
**अथवा**  
 सामंती या खंडीय या एकीकृत राजनीति के संदर्भ में प्रारंभिक मध्ययुगीन राज्य व्यवस्था की प्रकृति पर एक नोट लिखें।
- 4 दिल्ली सल्तनत के विघटन का विवरण दीजिए। 12  
**अथवा**  
 दिल्ली सल्तनत के राजस्व प्रशासन के विकास के विभिन्न चरणों पर एक नोट लिखिए।
- 5 अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण नीति का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 12  
**अथवा**  
 दिल्ली के सुल्तानों की मुद्रा प्रणाली का वर्णन कीजिए।
- 6 12वीं से 16वीं शताब्दी के बीच के क्षेत्रीय राज्यों में चित्रकला की विभिन्न शैलियों पर एक नोट लिखिए। 12  
**अथवा**  
 विजयनगर साम्राज्य के दौरान स्थानीय प्रशासन पर एक नोट लिखिए।

**भाग 3: प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए।**

7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर लगभग 100-100 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए : 6+6
- बहमनी
  - अमीर खुसरो
  - खिलजी के तहत क्षेत्रीय विस्तार
  - हिंदी साहित्य का विकास